करुणा का महत्व

फ्लोरेंस नाइटिंगेल की कथा



लेखिका : ऐन डोनेगन जॉनसन

हिंदी : योगेश

करुणा का महत्व

फ्लोरेंस नाइटिंगेल की कथा





लेखिका : ऐन डोनेगन जॉनसन

हिंदी : योगेश



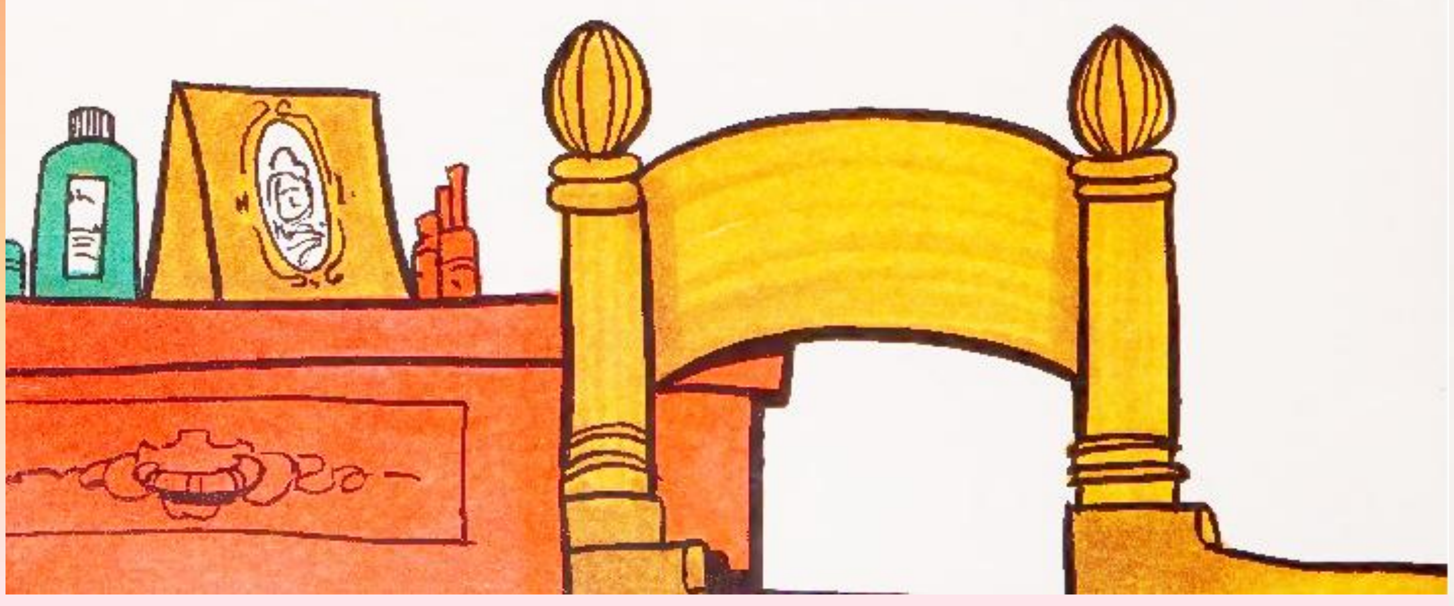
बहुत समय पहले की बात है...
दूर देश इटली में, एक युवा अंग्रेज़ दंपती अपनी नन्ही-सी नवजात बेटी को निहार रहे थे।

"कितनी प्यारी है हमारी बेटी?" श्रीमती नाइटिंगेल ने कहा। "वाकई," श्रीमान नाइटिंगेल ने सहमति जताई। "हम उसका नाम क्या रखें?"

"मेरे मन में एक विचार आया है—क्यों न उसका नाम फ्लोरेंस रखें?"

फ्लोरेंस इटली के उस शहर का नाम था जहाँ उनकी छोटी-सी बेटी का जन्म हुआ था।

"बहुत अच्छा विचार है!" उनके पति ने खुशी से कहा। "हाँ, फ्लोरेंस नाइटिंगेल—यह नाम उस पर बिल्कुल ठीक बैठता है।"





एक शाम, जब फ्लोरेंस लगभग एक वर्ष की थी और उसकी बहन पार्थेनोप दो वर्ष की हो चुकी थी, श्रीमती नाइटिंगेल ने कुछ सोचते हुए अपने पति से कहा।

"मुझे लगता है कि अब हमें इंग्लैंड लौट जाना चाहिए," उन्होंने कहा। तब तक नाइटिंगेल परिवार इटली में तीन वर्षों से रह रहा था।

"क्या तुम यहाँ खुश नहीं हो?" श्रीमान नाइटिंगेल ने पूछा।

"हाँ, बिल्कुल मैं खुश हूँ," उनकी पत्नी ने उत्तर दिया। "यहाँ रहना बहुत शानदार रहा है। लेकिन लड़कियाँ बहुत तेज़ी से बड़ी हो रही हैं। हमें उनके बारे में—और उनके भविष्य के बारे में—सोचना होगा।"

"तुम ठीक कह रही हो," श्रीमान नाइटिंगेल ने सहमति जताई। "अब समय आ गया है कि हम अपने ही देश में बस जाएँ।"





और इस तरह नाइटिंगेल परिवार ने अपना सारा सामान और संदूक बाँधे और इंग्लैंड के डर्बीशायर स्थित अपने देहाती निवास की ओर लौट आए। उस स्थान का नाम लीहर्स्ट था, और श्रीमान नाइटिंगेल ने वहाँ अपने परिवार के लिए एक सुंदर नया घर बनवाया था।

"यह तो बेहद मनोहर है!" श्रीमती नाइटिंगेल ने उसे देखकर कहा। "और यहाँ से दृश्य भी कितना शानदार है! मैं अपने सभी मित्रों को यहाँ आने का निमंत्रण दे सकूँगी और शानदार पार्टियाँ आयोजित करूँगी।"

श्रीमती नाइटिंगेल को अपने आसपास बहुत से लोगों का होना बहुत पसंद था।

जब फ्लोरेंस और पार्थेनोप बड़ी हो रही थीं, तब उनका घर हमेशा मित्रों और रिश्तेदारों से भरा रहता था। वे उनके साथ समय बिताने का आनंद लेती थीं, और फ्लोरेंस तो खास तौर पर तब बहुत खुश होती थी, जब मेहमानों में छोटे बच्चे होते थे।

"छोटे बच्चों की देखभाल मुझे ही करने दो," वह अक्सर विनती करती। फिर वह अपना सारा समय उन्हीं की देखभाल में लगा देती—उन्हें खुश करने के लिए नए-नए खेल गढ़ती और यह ध्यान रखती कि उन्हें कहीं चोट न लग जाए।

नाइटिंगेल परिवार से मिलने आए बच्चों में फ्लोरेंस का एक खास पसंदीदा था—उसका एक छोटा-सा चचेरा भाई, जिसका नाम रॉबर्ट था।

"बेचारा नन्हा-सा," फ्लोरेंस ने अपनी बहन से कहा, जब वह रॉबर्ट को अपनी गोद में उछाल रही थी। "लगभग कोई भी उस पर ध्यान नहीं देता, सिवाय इसके कि शायद यह कह दे कि वह कितना बदसूरत बच्चा है।"

"खैर," पार्थेनोप ने टिप्पणी की, "यह सच तो है ही, है न?"



"लेकिन यह कोई कारण नहीं कि उसे कम प्यार किया जाये," फ्लोरेंस ने विरोध किया।

दरअसल, फ्लोरेंस एक बहुत ही दयालु और करुणामय लड़की थी। वह कभी भी किसी की बदकिस्मती या दुख को देख नहीं पाती थी, बिना गहरी सहानुभूति महसूस किए और उसके दुःख को दूर करने के लिए कुछ न कुछ करने की तीव्र इच्छा किए बिना।



जानवरों के साथ भी फ्लोरेंस का यही हाल था। अगर उसे पता चलता कि कोई घोड़ा घायल है या कोई बछड़ा बीमार है, तो वह अस्तबल या खलिहान के चक्कर लगाती रहती और जो भी कर सकती, उसकी मदद करती। और वह अक्सर अनाथ गिलहरियों या घायल पक्षियों को बचा लाती और तब तक उनकी देखभाल करती रहती, जब तक वे अपने दम पर संभल न जाएँ।

"मैं कहता हूँ," एक दिन श्रीमान नाइटिंगेल ने कहा, जब उन्होंने फ्लोरेंस को उसके एक खास मरीज़ के साथ देखा। "मुझे लगता है कि तुम अपने परिवार से ज़्यादा उस गौरैया की चिंता करती हो।"

"लेकिन पिताजी," फ्लोरेंस ने समझाया, "आप लोगों की चिंता करने की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। आप सब तो खुशहाल और स्वस्थ हैं।"

"हाँ, बिल्कुल," उनके पिता हँसते हुए बोले। "बस ध्यान रखना कि तुम्हारा यह दयालु हृदय तुम्हें अपनी पढ़ाई की उपेक्षा न करने दे।"

श्रीमान नाइटिंगेल स्वयं ही अपनी बेटियों की शिक्षा का ध्यान रखते थे। वे उन्हें लैटिन, ग्रीक, फ्रेंच, इतालवी, इतिहास, दर्शन और गणित पढ़ाते थे।

फ्लोरेंस पढ़ाई में बहुत रुचि रखती थी, लेकिन पार्थेनोप को पढ़ना-लिखना बिल्कुल पसंद नहीं था। "मुझे समझ ही नहीं आता कि हमें यह सब जानने की भला क्या ज़रूरत है," वह कुड़कुड़ाती। "मैं तो आज शाम की पार्टी के लिए माँ की मदद करते हुए फूल सजाना कहीं ज़्यादा पसंद करूँगी।"

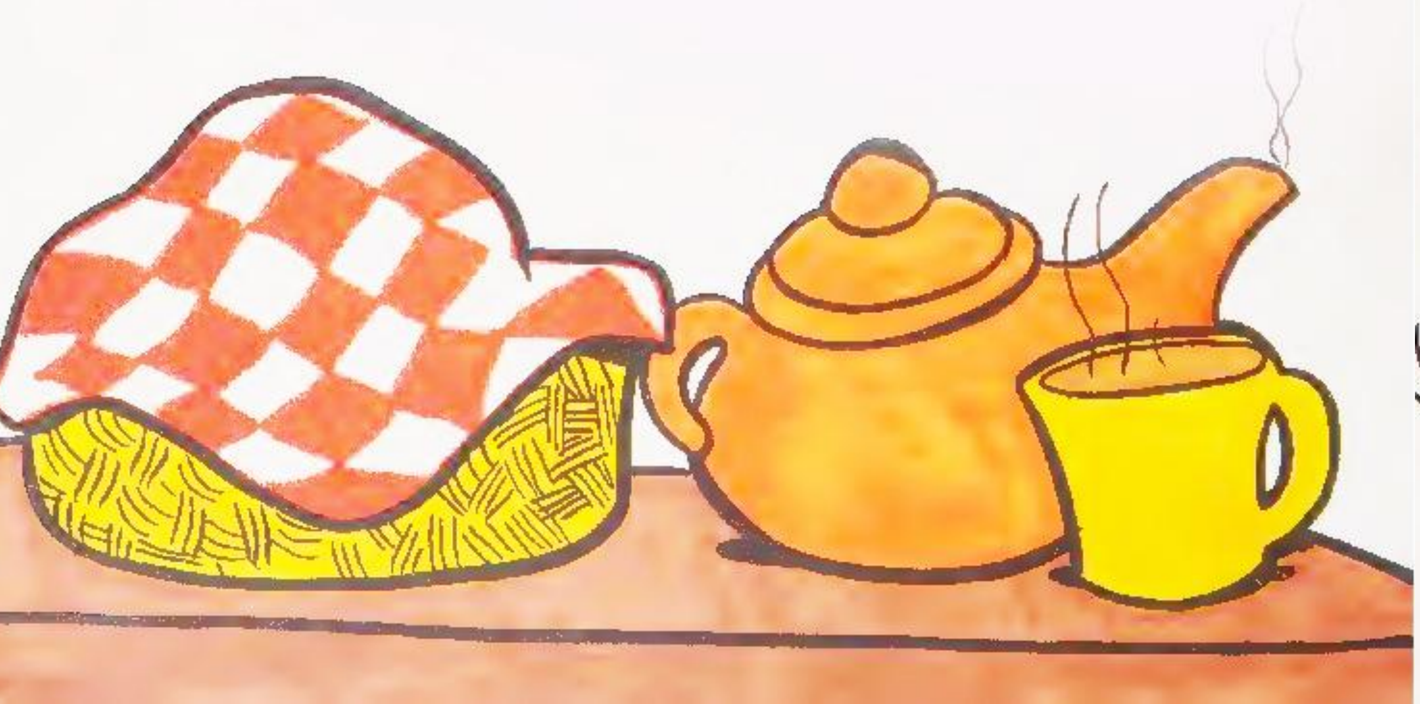
फ्लोरेंस को यह बात बिल्कुल समझ में नहीं आती थी। उसे फूल सजाने का काम बहुत उबाऊ और अर्थहीन लगता था।



जब लड़कियाँ पढ़ाई में व्यस्त नहीं होती थीं, तो वे अक्सर अपनी माँ के साथ लीहर्स्ट के आसपास की झोपड़ियों में होने वाली उनकी साप्ताहिक यात्राओं पर जाती थीं। इन झोपड़ियों में कई गरीब लोग रहते थे, और श्रीमती नाइटिंगेल उनके लिए भोजन और अन्य आवश्यक वस्तुएँ ले जाया करती थीं।

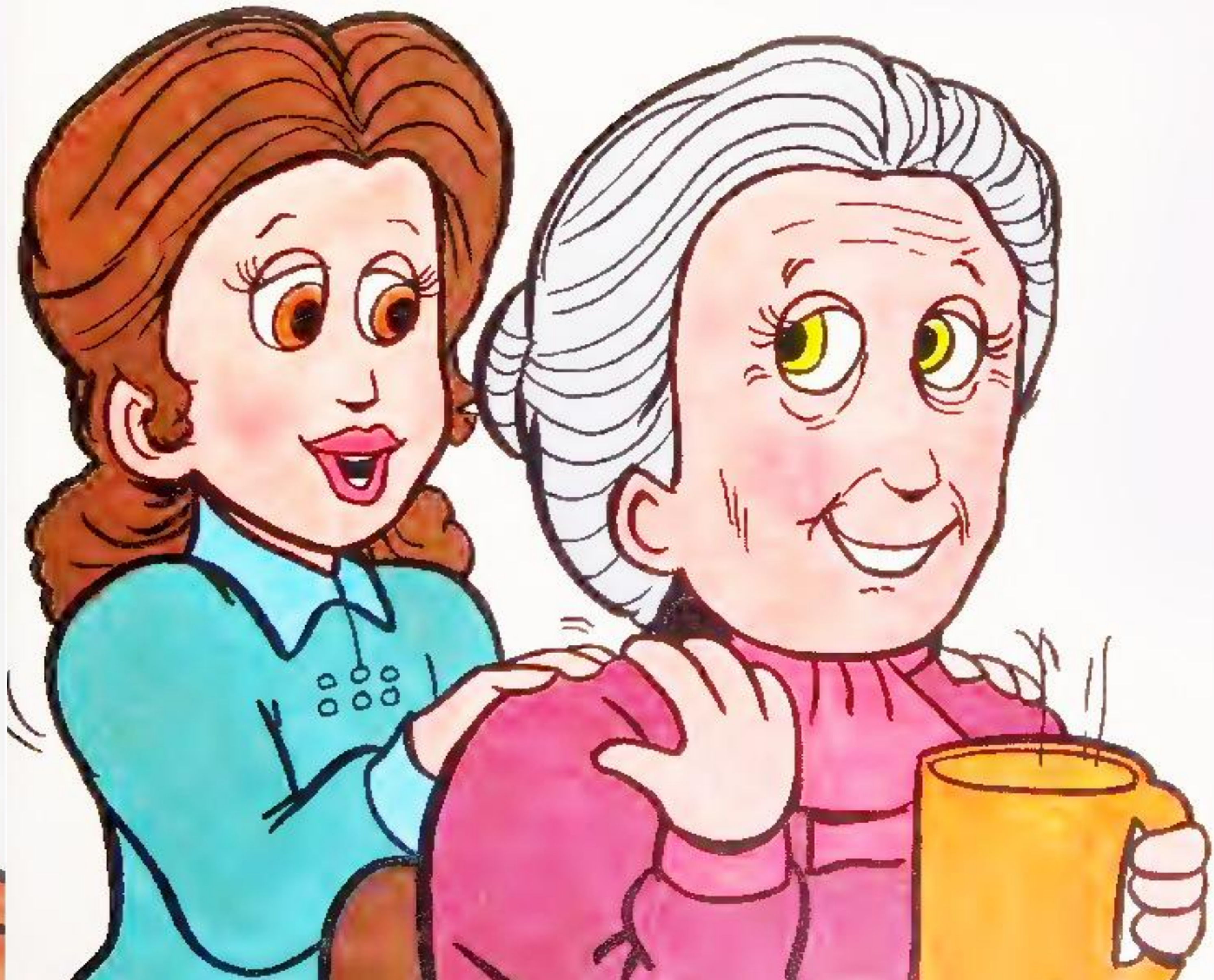
"हमसे कम सौभाग्यशाली लोगों की सहायता करना हमारा कर्तव्य है," वह अपनी बेटियों से कहती थीं।

फ्लोरेंस को यह बात समझाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी। उसका करुणामय, कोमल हृदय उन झोपड़ियों में रहने वालों की दुर्दशा देखकर दुख से भर जाता था। "यह बिल्कुल न्यायसंगत नहीं है कि ये लोग इतने गरीब हों!" वह व्याकुल होकर कहती।



"मुझे पता है," उसकी माँ ने उत्तर दिया। "लेकिन हम उनके लिए जितना कर सकते हैं, उतना तो करते ही हैं, और हम पूरी दुनिया तो बदल नहीं सकते।"

लेकिन फ्लोरेंस को लगता था कि वह इन झोपड़ियों में रहने वालों के लिए और भी ज़्यादा कर सकती है। जैसे-जैसे वह बड़ी होती गई, वह अपने आप ही उनसे मिलने जाने लगी—खासकर उन लोगों से, जो बीमार होते थे। वह उनके कमरे ठीक करती, उनकी पीठ सहलाती, उनके लिए चाय या सूप बनाती और फिर कुछ देर शांत होकर उनके पास बैठकर उनसे बातें करती रहती।

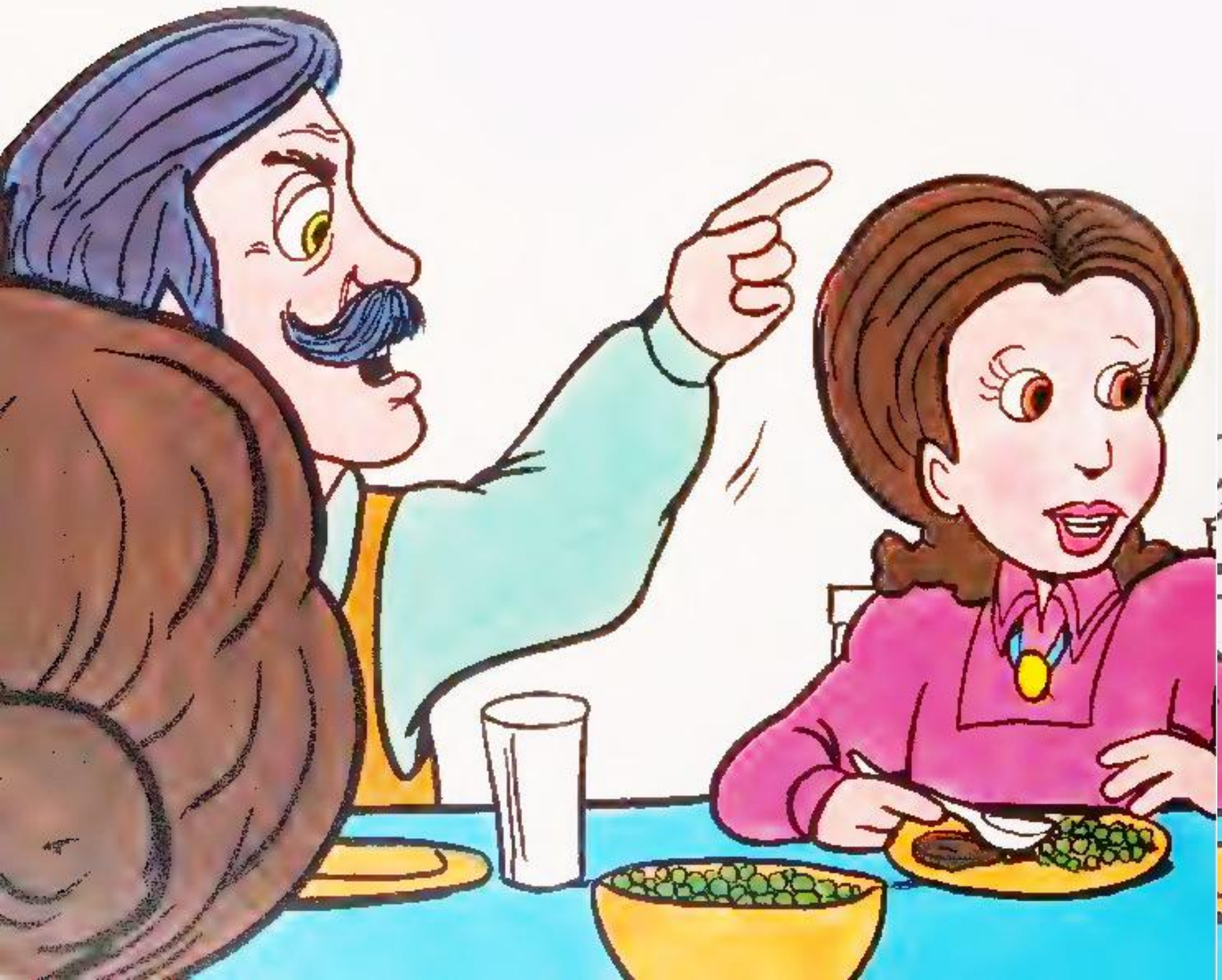


"फ्लोरेंस कहाँ है?" एक शाम, जब फ्लोरेंस सोलह वर्ष की थी, श्रीमान नाइटिंगेल ने भोजन के लिए बैठते हुए पूछा।

किसी के उत्तर देने से पहले ही फ्लोरेंस स्वयं तेज़ी से भोजन-कक्ष में आ पहुँची। "मुझे देर हो गई, इसके लिए क्षमा चाहती हूँ। बूढ़ी दादी क्लार्कसन बहुत बीमार हैं और उन्हें अच्छा लगता है कि मैं उनके पास बैठूँ।"

"इस हफ्ते यह तीसरी बार है, फ्लोरेंस," उसकी माँ ने डाँटा। "करुणा अच्छी बात है, लेकिन उसे हद से ज़्यादा नहीं बढ़ाना चाहिए। तुम्हारी और भी ज़िम्मेदारियाँ हैं।"

"मुझे पता है," फ्लोरेंस ने कहा, "लेकिन अगर इससे उन्हें थोड़ा-सा भी सुकून मिलता है, तो यह करना मुझे बहुत छोटा-सा काम लगता है।"



"अच्छा, तो कल समय पर ज़रूर लौट आना। घर में मेहमान आ रहे हैं।"

"ओह, फिर से," फ्लोरेंस ने मन ही मन सोचा। कुछ समय से उसे अपनी माँ की लगातार पार्टियाँ और भी ज़्यादा निरर्थक और थकाऊ लगने लगी थीं।



"फ्लोरेंस, उदास मत बैठी रहो और आकर हमारे मेहमानों का स्वागत करो," श्रीमती नाइटिंगेल ने आग्रह किया, जैसे ही पहली गाड़ी दरवाज़े पर आकर रुकी। "आख़िर तुम्हें हुआ क्या है?"

"बस इतना ही है कि यह सब मुझे समय की बहुत बड़ी बर्बादी लगता है," उसकी बेटी ने धीमे से कहा।

"बिल्कुल बकवास," श्रीमती नाइटिंगेल ने उत्तर दिया। "इतने सारे अच्छे युवा पुरुष हैं, जो तुम्हें बहुत पसंद करते हैं! तुम्हारी उम्र की किसी लड़की को और क्या चाहिए? अब इतनी आलोचनात्मक मत बनो और बाकी नौजवानों की तरह आनंद लेने की कोशिश करो।"



"चलो न, फ्लोरेंस," पार्थेनोप ने कहा। "संगीत और नृत्य में बहुत मज़ा आएगा, और लड़के भी कितने सुंदर हैं।"

फ्लोरेंस ने आह भरी। "ज़िंदगी में इन बेकार की पार्टियों से कहीं ज़्यादा कुछ होना चाहिए," उसने मन ही मन कहा। लेकिन वह शिष्ट और विचारशील स्वभाव की थी, इसलिए वह मुस्कान के साथ आगे बढ़ी और मेहमानों का स्वागत किया।





“अरे, भगवान का शुक्र है कि यह सब खत्म हुआ!” फ्लोरेंस ने सोचा, जब वह अपने बिस्तर में सिमट गई। “मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसी और ज़्यादा शामें सह पाऊँगी।”

“ओह, फ्लोरेंस नाइटिंगेल, अपने लिए इतनी दया मत दिखाओ,” एक नन्ही-सी आवाज़ ने उसे डाँटा।

फ्लोरेंस चौंककर सीधी बैठ गई। “कौन है वहाँ?” वह चिल्लाई।

“बस मैं,” उस आवाज़ ने उत्तर दिया।

फ्लोरेंस ने चारों ओर देखा। आवाज़ उसके बिस्तर के पास रखे दीपक से आती हुई लग रही थी। “लेकिन दीपक तो बोलते नहीं हैं,” वह काँपती हुई बोली।

“हो सकता है बोलते हों, हो सकता है नहीं,” दीपक ने कहा। “तुम्हें कैसे पता?”

“तुम कौन हो?” फ्लोरेंस ने सवाल किया।

“एक दोस्त। तुम मुझे जो चाहो, कह सकती हो।”

फ्लोरेंस ने पल भर सोचा। “मैं समझ गई —मैं तुम्हें लूसी कहूँगी। इसका मतलब ‘रोशनी’ होता है, इसलिए दीपक के लिए यह बिल्कुल सही नाम है। लेकिन तुम यहाँ क्या कर रही हो, लूसी?”

“दरअसल, तुम अपनी ज़िंदगी से बहुत खुश नहीं लगतीं,” लूसी ने कहा, “और मुझे लगा कि तुम्हें किसी से बात करने की ज़रूरत है।”



अब फ्लोरेंस को पूरा विश्वास था कि दीपक बोलते नहीं हैं, लेकिन उसने मान लिया कि वह लूसी की कल्पना कर रही है, क्योंकि सचमुच उसे किसी से बात करने की ज़रूरत थी। "तुम सही कह रही हो," उसने स्वीकार किया।

"मैं अक्सर सही ही होती हूँ," लूसी ने हल्के-फुल्के अंदाज़ में कहा। "तो फिर बताओ, अब तुम अपनी ज़िंदगी के बारे में क्या करने वाली हो?"

"यही तो समस्या है," फ्लोरेंस ने रुआंसी होकर कहा। "मुझे नहीं पता कि क्या करूँ—मैं खुद को बहुत बेकार-सा महसूस कर रही हूँ।"

"तुम अपनी माँ की मदद तो करती हो, है न?" लूसी ने सुझाव दिया।

"अगर तुम्हारा मतलब कपड़े, चीनी-मिट्टी के बर्तन और चाँदी के सामान को छाँटना और गिनना है, तो हाँ," फ्लोरेंस ने कहा। "लेकिन इससे तो बात और बिगड़ जाती है। जब इतने सारे लोग इतनी दयनीय हालत में जी रहे हैं, तो समझदार लोग इन सब चीज़ों की चाह कैसे रख सकते हैं?"



"मैं तुम्हारी बात समझती हूँ," लूसी ने सहमति जताई।

"लेकिन क्या तुम्हें यह भी समझ में आता है कि मैं इसके बारे में क्या कर सकती हूँ?" फ्लोरेंस ने पूछा।

"यह निर्णय तो तुम्हें खुद ही लेना होगा। तुम्हारे अंदर करुणा का भण्डार भरा है, लेकिन तुम्हारी उम्र अभी बहुत कम है। मेरा सुझाव है कि तुम अपने आसपास देखती-भालती रहो कि तुम्हें क्या करना चाहिए। समय के साथ तुम्हें यह अवश्य सूझेगा कि लोगों की मदद कैसे की जाय।"

"शायद तुम ठीक ही कहती हो," फ्लोरेंस ने एक ठंडी सांस भर कर कहा।



साल में दो बार नाइटिंगेल परिवार कई हफ्तों के लिए लंदन में रहता था। ये समय फ्लोरेंस के लिए खास तौर पर बहुत कठिन होते थे। उसे वहाँ अकेले इधर-उधर घूमने की अनुमति नहीं थी, जैसी उसे लीहर्स्ट में मिलती थी, और इसलिए उसे लगता था कि ज़रूरतमंद लोगों के लिए कुछ करने का उसके पास कोई रास्ता नहीं है।

"क्या तुमने वे बच्चे देखे, पार्थेनोप, जब हम शहर में प्रवेश कर रहे थे?" उसने अपनी बहन से कहा। "वे कितने बीमार, भूखे और ठंड से ठिठुरते लग रहे थे। और क्या तुमने सड़कों की गंदगी और कचरा देखा—जो बहकर उसी नदी में जा रहा था, जिससे लोग पीने का पानी लेते हैं?"

"हाँ, ज़रूर देखा, फ्लोरेंस," पार्थेनोप ने कहा। "लेकिन ऐसी अप्रिय बातों के बारे में सोचने से क्या फ़ायदा?"

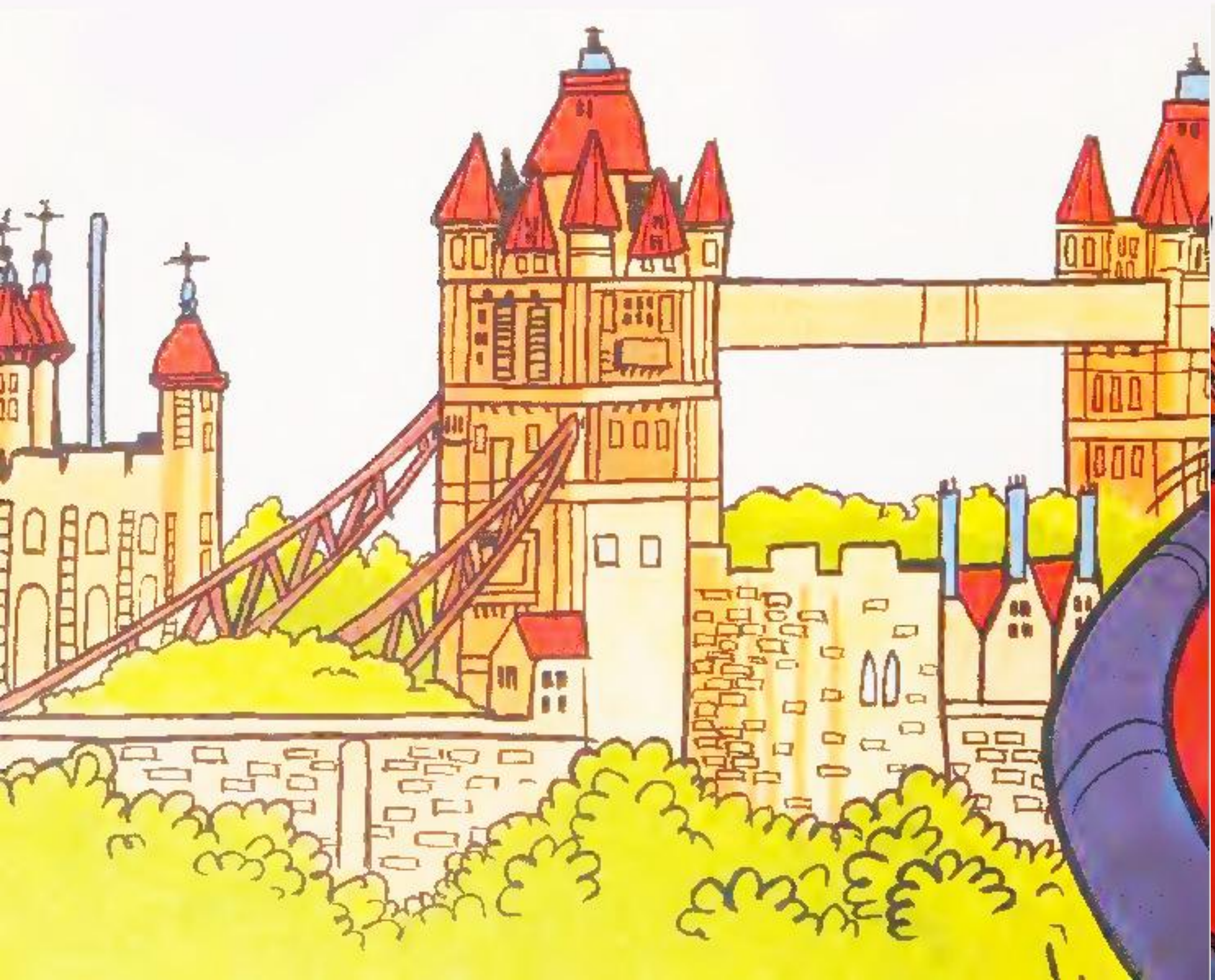
"मैं अपने आप को रोक नहीं पाती," फ्लोरेंस रो पड़ी। "वे लोग हमसे अलग नहीं हैं, बस उनके पास पैसा नहीं है। उन्हें ऐसी परिस्थितियों में रहने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए।"

"मैं सहमत हूँ," पार्थेनोप ने उत्तर दिया, "लेकिन सच कहूँ तो हम उनके लिए ज़्यादा कुछ कर भी नहीं सकते।"

"बकवास!" एक छोटी-सी आवाज़ ने कठोरता से कहा। "मुझे उम्मीद है कि मैं तुम्हें फिर कभी ऐसा कहते न सुनूँ, फ्लोरेंस। करुणा और दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति बहुत कुछ कर सकता है।"

"ओह, लूसी," फ्लोरेंस ने फुसफुसाकर कहा, "मुझे बहुत खुशी है कि तुम यहाँ हो!"

उसने घबराहट से पार्थेनोप की ओर देखा, यह सोचते हुए कि उसकी बहन एक बोलते हुए लैम्प के बारे में क्या सोचेगी। लेकिन फ्लोरेंस ही अकेली थी जो अपनी उस छोटी दोस्त को देख और सुन सकती थी।







दिन ऐसे लगने लगे मानो पार्टियों, गपशप भरी मुलाक़ातों और और भी पार्टियों की तैयारियों की एक अंतहीन कड़ी हों। फ्लोरेंस बहुत उदास रहने लगी।

"अरे, इस खराब मूड से बाहर आओ," उसकी माँ ने अधीरता से कहा। "तुम बस वहीं बैठी रहती हो और उदास रहती हो। तुम अपनी बहन की तरह आसपास के अच्छे युवाओं के साथ खुश क्यों नहीं रह सकती?"

लेकिन सामाजिक चकाचौंध में फ्लोरेंस की कोई रुचि नहीं थी। उसने अपनी माँ को समझाने की कोशिश की कि उसे कुछ ज़्यादा सार्थक करना चाहिए, लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ।

"मैं क्या करूँ, लूसी?" फ्लोरेंस ने थकी हुई आवाज़ में अपनी मित्र से फुसफुसाकर पूछा।

"इतनी निराश मत हो," लूसी ने उत्तर दिया। "जब समय आएगा, तुम खुद जान जाओगी।"

"मुझे फ्लोरेंस की चिंता हो रही है," लंदन में उनका प्रवास समाप्त होने के क़रीब आते ही श्रीमती नाइटिंगेल ने अपने पति से कहा। "उसे किसी भी चीज़ में रुचि नहीं दिखती।"

"मुझे नहीं लगता कि यह पूरी तरह सच है," फ्लोरेंस के पिता ने उत्तर दिया। "वह एक अच्छी छात्रा है और सीखना पसंद करती है।"

"हाँ, लेकिन उसकी उम्र की लड़की को थोड़ा आनंद भी लेना चाहिए। क्यों न हम उसे यात्रा पर ले जाएँ? हम फिर से इटली जा सकते हैं। शायद इससे उसके विचार बदल जाएँ।"

श्रीमान नाइटिंगेल ने कुछ देर सोचा। "यह बहुत अच्छा सुझाव है।"





और इस तरह नाइटिंगेल परिवार इटली के लिए रवाना हुआ। वे फ्रांस से होकर एक बड़ी बग्घी में गए, जिसे श्रीमान नाइटिंगेल ने स्वयं डिज़ाइन किया था। उनके साथ छह सेवक थे और बग्घी को तीन जोड़ी घोड़े खींच रहे थे।

फ्लोरेंस ने जिन-जिन स्थानों से वे गुज़रे, उन सबके बारे में बड़े ध्यान से नोट्स बनाए—दूरियों के बारे में, मौसम के बारे में, क़ानूनों के बारे में और लोगों के रहने की परिस्थितियों के बारे में। उसने इस यात्रा का भरपूर आनंद भी लिया। उसे वहाँ के सुंदर गिरजाघर, चौक और महल बहुत पसंद आए, और जो शानदार संगीत सभाएँ उन्होंने सुनीं, वे भी उसे बहुत भायीं।

सबसे बढ़कर, उसे फ्लोरेंस शहर से प्रेम हो गया, जहाँ वे भव्य नृत्य-समारोहों में गए और कई बेहद रोचक लोगों से मिले।

आख़िरकार इंग्लैंड लौटने का समय आ गया।

श्रीमती नाइटिंगेल इस बात से बहुत प्रसन्न थीं कि उनका विचार सफल रहा। आखिरकार फ्लोरेंस भी अपनी उम्र की दूसरी लड़कियों की तरह व्यवहार करने लगी थी।

लेकिन दुनिया के गरीब और असहाय लोगों के प्रति फ्लोरेंस की चिंता वास्तव में कभी ख़त्म नहीं हुई थी।

जैसे ही वह लीहर्स्ट लौटी, फ्लोरेंस ने गाँव के बीमार लोगों से फिर मिलने जाना शुरू कर दिया। शाम को वह लूसी के साथ बैठकर चुपचाप उनकी समस्याओं के बारे में बात करती।

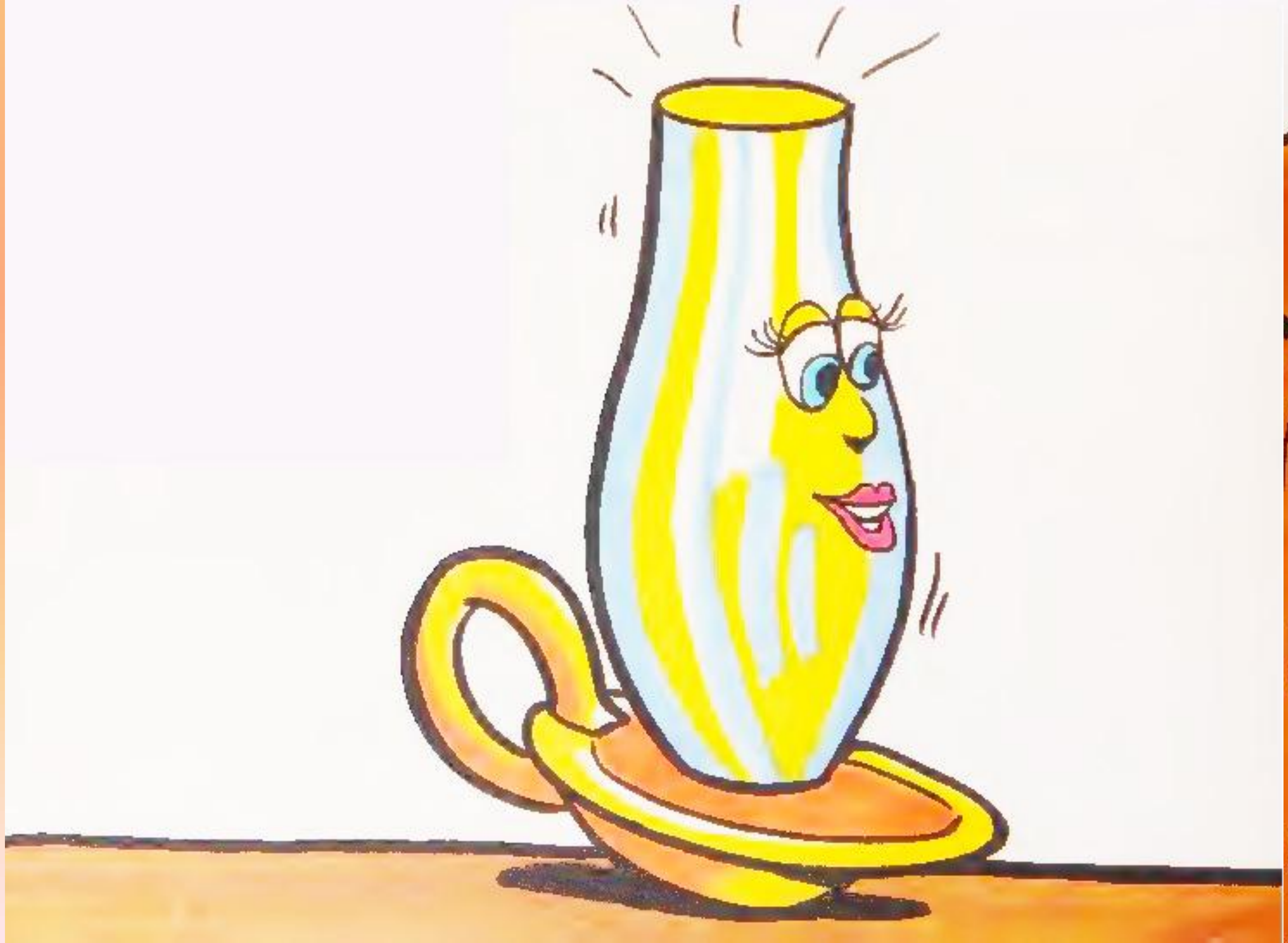
"मैं उन्हें करुणा दे सकती हूँ, लूसी, और शायद उन्हें थोड़ा आराम भी पहुँचा सकती हूँ, लेकिन यह काफ़ी नहीं है। मुझे नहीं पता कि उन्हें ठीक करने के लिए क्या करूँ। काश, मुझे और ज्ञान होता!"

"क्या तुम सीख नहीं सकती?" लूसी ने पूछा।

और अचानक फ्लोरेंस को सब कुछ समझ में आ गया। उसे पता चल गया कि वह क्या करना चाहती है।

"बिलकुल सही, लूसी!" उसने उत्साह से कहा। "मैं सीखूँगी। मैं अस्पतालों के बारे में, बीमारियों और चोटों के बारे में, और हर एक का इलाज कैसे किया जाता है—सब कुछ सीखूँगी। मैं नर्स बनूँगी!"

"ओह भगवान," लूसी ने कहा, "तुम्हारा परिवार इस पर क्या कहेगा?"



फ्लोरेंस का परिवार स्तब्ध रह गया। उस समय नर्सिंग को सम्मानजनक पेशा नहीं माना जाता था।

"मेरी बेटी नर्सिंग करे—कभी नहीं!" उसकी भयभीत माँ चिल्ला उठीं।

"फ्लोरेंस, तुम नर्स नहीं बन सकती," उसकी बहन चीख पड़ी। "लोग क्या कहेंगे?"

"तुम्हारी पृष्ठभूमि की लड़कियाँ नर्सिंग नहीं करतीं," उसके पिता ने कुछ नरमी से कहा। "हालात बहुत भयानक होते हैं। तुम उन्हें सहन नहीं कर पाओगी।"

श्रीमती नाइटिंगेल और पार्थेनोप इस विचार से बहुत व्यथित हो गईं। बहस पर बहस होती रही। महीने बीत गए—और साल भी।



लेकिन फ्लोरेंस दृढ़ निश्चयी थी। उसने चिकित्सा से संबंधित किताबें खरीदीं और रात में अपने कमरे में बैठकर उनका अध्ययन किया। उसने महाद्वीप में रहने वाले अपने मित्रों से दूसरे देशों के अस्पतालों और गरीबों के लिए बने संस्थानों पर रिपोर्टें भेजने को भी कहा।





"यह सब किस लिए है?" लूसी ने पूछा, फ्लोरेंस के चारों ओर बिखरे काग़ज़ों के ढेरों को देखते हुए।

"देखो, किसी भी चीज़ के बारे में कुछ करने से पहले मुझे यह तो जानना ही होगा कि वास्तव में हो क्या रहा है," फ्लोरेंस ने समझाया।

"इस बात में कोई संशय नहीं है," उसकी मित्र ने कहा।

एक दिन फ्लोरेंस ने अपने पिता के एक डॉक्टर मित्र को इस बात के लिए भी मना लिया कि वह उसे लंदन के एक अस्पताल का दौरा कराएँ। वहाँ उसने जो कुछ देखा, उससे वह भयभीत रह गई।

हालात बेहद भयावह थे। मरीज़ गंदे थे और उनकी ठीक से देखभाल नहीं की जा रही थी। वार्ड और बिस्तर इतने मैले थे कि फ़र्श पर चूहे दौड़ते फिरते थे। सभी की देखभाल के लिए पर्याप्त डॉक्टर नहीं थे। नर्सें और परिचारक भी लगभग मरीज़ों जितने ही गंदे थे।

"अब मैं समझ सकती हूँ कि तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे नर्स बनने के इतने ख़िलाफ़ क्यों हैं," लूसी ने कहा।

"मैं यह सब बदल कर रहूँगी," फ्लोरेंस ने प्रतिज्ञा की। नर्स बनने और नर्सिंग को एक सम्मानजनक पेशा बनाने के अपने सपने को पूरा करने के लिए वह पहले से कहीं अधिक दृढ़ निश्चयी हो गई थी।

फ्लोरेंस जानती थी कि नर्सिंग के बारे में उसे अभी बहुत कुछ और सीखना है।

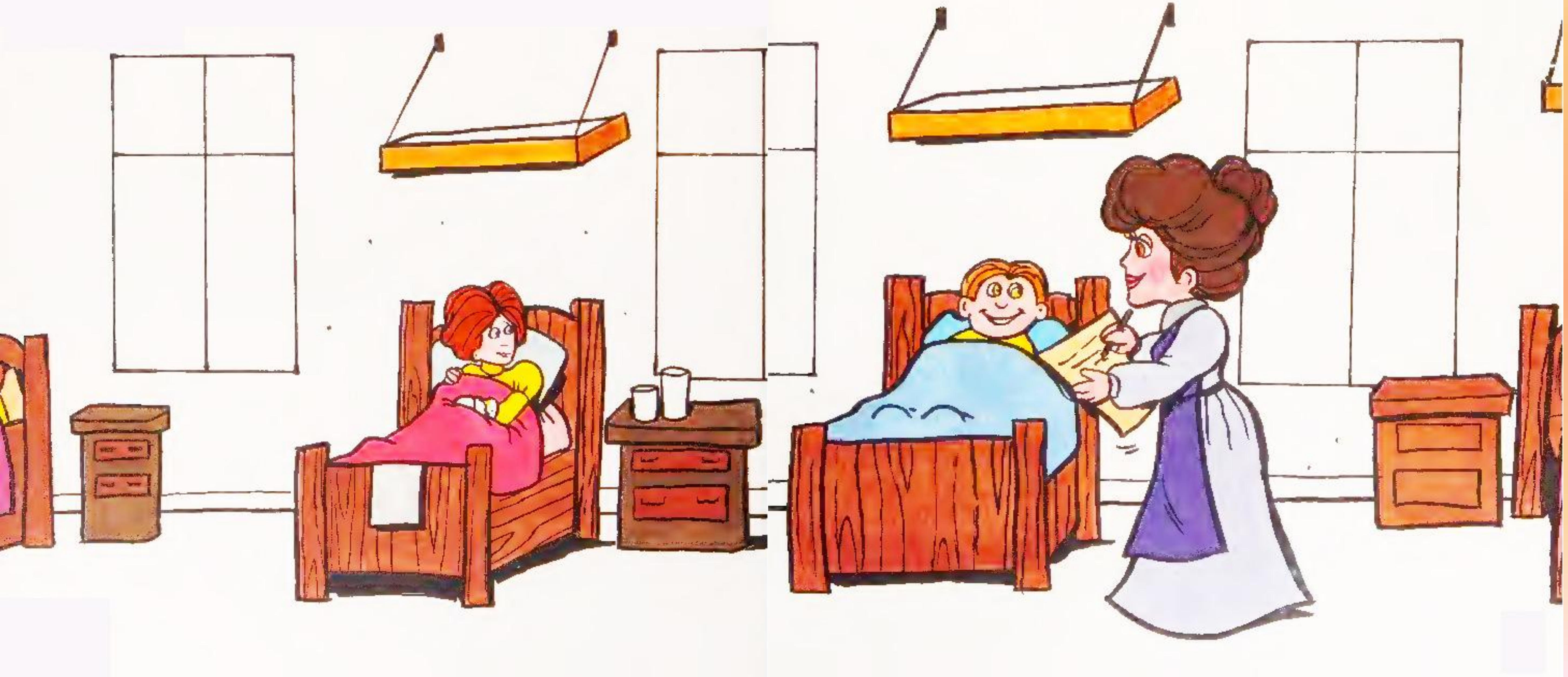
"मुझे लगता है कि दूसरे देशों में अस्पतालों में बड़े सुधार किए जा रहे हैं," एक दिन लूसी ने कहा। "क्यों न तुम अपने उन मित्रों के निमंत्रण स्वीकार कर लो, जो चाहते हैं कि तुम विदेश आकर उनसे मिलो? साथ-साथ तुम कुछ अस्पताल भी देख सकोगी और यह अध्ययन कर सकोगी कि उन्हें कैसे चलाया जाता है।"

"लूसी, क्या शानदार विचार है!" फ्लोरेंस खुशी से बोली। "और अगर मैं माँ से अस्पतालों का ज़िक्र ही न करूँ, तो उन्हें मेरी कोई चिंता भी नहीं होगी।"

वास्तव में, पिछली यात्रा से फ्लोरेंस का ध्यान भटकने का अनुभव याद करते हुए, श्रीमती नाइटिंगेल अपनी बेटी को एक नई यात्राओं की श्रृंखला पर भेजने के लिए पूरी तरह तैयार हो गईं।

फ्लोरेंस ने फ़्रांस, जर्मनी और आयरलैंड की यात्राएँ कीं। वह जहाँ भी गई, वहाँ के अस्पतालों का दौरा किया और उनके बारे में जितना हो सका, सब कुछ सीखा। उसने इस बात के नोट्स बनाए कि अस्पताल कैसे संगठित थे, उनमें साज-सामान कैसा था, मरीज़ों का इलाज कैसे किया जाता था और उन्हें क्या भोजन दिया जाता था।

जब फ्लोरेंस घर लौटी, तब तक वह अस्पतालों और उनके संचालन की एक विशेषज्ञ बन चुकी थी।



हालाँकि, फ्लोरेंस के माता-पिता अब भी लंदन के किसी अस्पताल में उसके नर्स बनने के सख़्त विरोध में थे। उन दिनों, जब संपन्न लोग बीमार पड़ते थे, तो उनकी देखभाल उनके अपने घरों में ही की जाती थी। अस्पतालों में केवल गरीब लोग ही जाते थे। श्रीमती नाइटिंगेल को अपनी बेटी के ऐसे लोगों के बीच काम करने का विचार बिल्कुल सहन नहीं होता था।

"मैं बिल्कुल इंकार करती हूँ," वह हर बार साफ़-साफ़ कह देतीं, जब भी फ्लोरेंस इस विषय को फिर से उठाती। "तुम्हारी परवरिश वाली लड़की ऐसा काम नहीं करती।"

"वैसे भी, तुम्हारी मौसी बीमार हैं," उन्होंने जोड़ा। "चूँकि तुम्हें नर्सिंग का इतना शौक है, तो मेरा सुझाव है कि तुम जाकर उनकी देखभाल करो।"





फ्लोरेंस अपने माता-पिता को दुखी नहीं करना चाहती थी, इसलिए वह अपनी मौसी की देखभाल करने चली गई।

"मौसी के लिए जो कुछ मैं कर सकती हूँ, उसे करके मुझे खुशी है," उसने लूसी से मन की बात कही, "लेकिन मुझे लगता है कि बाहर ऐसे लोग भी हैं जिन्हें मेरी कहीं ज़्यादा ज़रूरत है।"

उसकी नन्ही मित्र समझती थी कि फ्लोरेंस कैसा महसूस कर रही है। "इसे थोड़ा समय दो," उसने कहा। "शायद तुम्हारे माता-पिता अपना मन बदल लें।" लूसी जानती थी कि ऐसा होना मुश्किल है, लेकिन वह फ्लोरेंस का हौसला बनाए रखना चाहती थी।

फिर, थोड़े ही समय बाद, कुछ ऐसा हुआ जिसने फ्लोरेंस को अपने हाथों में हालात सँभालने का अवसर दे दिया।

क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि वह क्या था?

फ्लोरेंस को नौकरी की पेशकश हुई! उसे लंदन के एक छोटे से अस्पताल की अधीक्षिका (सुपरिंटेंडेंट) का पद संभालने के लिए कहा गया। यह अस्पताल अच्छे घरानों की बीमार महिलाओं के लिए था, जिनकी देखभाल करने वाला कोई परिवार नहीं था। फ्लोरेंस का काम था—नई जगह पर जाकर अस्पताल का पूरी तरह से पुनर्गठन करना।

"लूसी, यहाँ बहुत सारा काम होगा," फ्लोरेंस ने कहा।

"मुझे पता है," लूसी ने उत्तर दिया, "लेकिन तुम्हें यह सब करते हुए बहुत आनंद आएगा।"

एक बार फिर लूसी सही साबित हुई। फ्लोरेंस पूरी लगन से इस काम में जुट गई। उसने बिस्तरों, कालीनों, पर्दों, बर्तनों—हर चीज़ की व्यवस्था की।

"सबसे ज़रूरी बात यह है कि अस्पताल मरीज़ों के लिए साफ़-सुथरा और आरामदेह हो, और उन्हें यह महसूस हो कि उनकी प्रेमपूर्वक देखभाल की जा रही है," फ्लोरेंस ने कहा।



उसकी सबसे बड़ी समस्या अच्छी नर्सें ढूँढने की थी। कोई भी ठीक से प्रशिक्षित नज़र नहीं आती थी। इसलिए फ्लोरेंस ने उन्हें स्वयं प्रशिक्षण देने का निश्चय किया। उसने सख़्त नियम बनाए और जो उनका पालन नहीं करते थे, उन्हें हटा दिया। साथ ही, वह अपनी नर्सों के प्रति भी उतनी ही करुणामय थी, जितनी अपने मरीज़ों के प्रति। वह उनकी समस्याएँ सुनती, और यह सुनिश्चित करती कि उनके साथ अच्छा और न्यायपूर्ण व्यवहार हो।

नर्सों ने भी इसका उत्तर पूरे मन से और खुशी-खुशी काम करके दिया।

जल्द ही फ्लोरेंस का अस्पताल इंग्लैंड में सबसे अच्छी तरह संचालित अस्पताल बन गया। लोग उसकी नर्सिंग, स्वच्छता और अस्पताल प्रबंधन की विधियों का अध्ययन करने आने लगे।

"आह, लूसी," फ्लोरेंस ने आनंद से कहा, "आख़िरकार मैं वही कर रही हूँ, जो मैं सचमुच करना चाहती थी।"



लंदन में नर्सिंग शुरू करने के लगभग एक साल बाद, ब्रिटेन रूस के खिलाफ़ एक युद्ध में शामिल हो गया। तुर्की, ब्रिटेन और फ़्रांस रूस को तुर्की की कुछ ज़मीन पर कब्ज़ा करने से रोकना चाहते थे। इस क्षेत्र को क्रीमिया कहा जाता था। वहाँ ब्रिटिश सैनिकों ने रूसियों के खिलाफ़ कुछ बेहद भयानक लड़ाइयाँ लड़ीं। बहुत से सैनिक मारे गए और उससे भी ज़्यादा घायल हुए।

जल्द ही लंदन के अख़बार क्रीमिया में घायल और बीमार सैनिकों की दयनीय हालत की ख़बरों से भर गए। आम जनता यह माँग करने लगी कि इन बहादुर सैनिकों की उचित देखभाल के लिए कुछ किया जाए।

"युद्ध-भूमि से आ रही रिपोर्टें बेहद भयावह हैं, फ्लोरेंस," श्री सिडनी हर्बर्ट ने कहा। "उचित भोजन, कपड़ों और चिकित्सा देखभाल के अभाव में सैकड़ों सैनिक मर रहे हैं।"

श्री हर्बर्ट युद्ध सचिव थे और फ्लोरेंस के सबसे पुराने मित्रों में से एक थे।





"कुछ न कुछ तो करना ही होगा," उन्होंने कहा और अस्पतालों की परिस्थितियों के बनाए गए रेखाचित्र उसे दिखाए। उन्हें देखकर फ्लोरेंस सिहर उठी।

"मुझे पता है कि मैं तुमसे बहुत बड़ी माँग कर रहा हूँ, फ्लोरेंस," उन्होंने आगे कहा, "लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम नर्सों का एक दल तैयार करो और क्रीमिया जाकर बीमार और घायल सैनिकों की उचित देखभाल की व्यवस्था करो।"

कहने की ज़रूरत नहीं कि फ्लोरेंस ने जाने के लिए तुरंत सहमति दे दी।

फ्लोरेंस जानती थी कि यह काम आसान नहीं होगा, लेकिन उसने इस चुनौती का स्वागत किया।

"चलो, लूसी," उसने फुर्ती से कहा, "हमें बहुत कुछ करना है, और जितनी जल्दी हम निकल पड़ें, उतना ही अच्छा होगा।"

फ्लोरेंस ने तुरंत ही यात्रा के लिए ज़रूरी चीज़ों की व्यवस्था करना शुरू कर दिया।

“हमारा सबसे बड़ा काम है ऐसी योग्य और करुणामय नर्सों को ढूँढना, जो हमारे साथ चलें।”

“ऐसी नर्सें बहुत ज़्यादा तो हैं नहीं,” लूसी ने टिप्पणी की।

आख़िरकार फ्लोरेंस ने अड़तीस नर्सों को साथ आने के लिए तैयार कर लिया, जिनमें से कुछ नन थीं। इसके बाद वे सभी मिलकर क्रीमिया की लंबी यात्रा पर निकल पड़े।



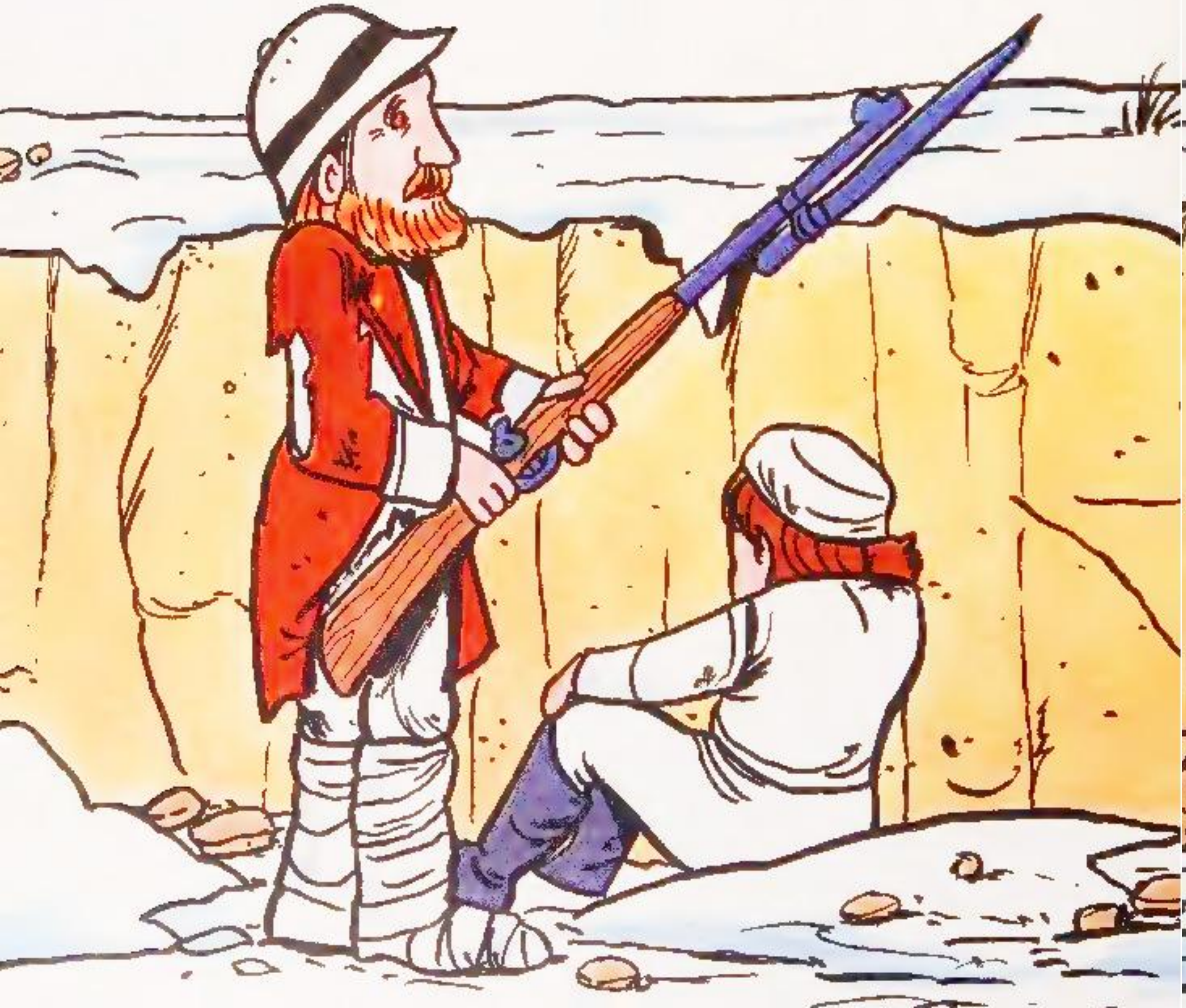


आख़िरकार फ्लोरेंस और नर्सें स्क्यूटारी स्थित ब्रिटिश अस्पताल पहुँच गईं। वहाँ जो कुछ उन्होंने देखा, उससे वे स्तब्ध रह गईं।

“ओह मैडम, ज़रा देखिए, इसे ये लोग अस्पताल कहते हैं!” नर्सों में से एक चिल्ला उठी। “यहाँ तो ढंग के वार्ड भी नहीं हैं। आदमी बस गलियारों में पड़े हुए हैं।”

वे लंबे, ठंडे और हवा से भरे पुराने गलियारे थे, जिनमें हर तरफ़ चूहे दौड़ते फिरते थे। वहाँ न तो बहता पानी था और न ही गर्मी की कोई व्यवस्था। छत से बारिश का पानी टपक रहा था।

क्रीमिया, जहाँ वास्तव में युद्ध चल रहा था, स्क्यूटारी से काला सागर के उस पार स्थित था। वहाँ जिन परिस्थितियों में ब्रिटिश सैनिक लड़ रहे थे, वे इससे बदतर शायद ही हो सकती थीं। रसद बहुत कम थी। सर्दियाँ आते ही कड़ाके की ठंड पड़ गई। सैनिकों के पास न पर्याप्त कंबल थे, न भोजन। वे जमा देने वाली ठंड में बिना कोट और जूतों के लड़ रहे थे। बहुत से सैनिक थकावट से मर रहे थे। जो बच जाते थे, वे बेहद कमज़ोर हो चुके थे।



काला सागर पार कर नावों से स्क्यूटारी पहुँचने वाले सैकड़ों घायल सैनिक उस कठिन और झकझोर देने वाली यात्रा से और भी कमज़ोर हो चुके थे। जब उन्हें अस्पताल लाया जाता, तो उन्हें रखने के लिए फ़र्श के अलावा कोई जगह नहीं होती थी। सभी की देखभाल के लिए पर्याप्त डॉक्टर नहीं थे, और जब तक कोई उनकी ओर ध्यान दे पाता, इससे पहले ही बहुत-से सैनिकों की मौत हो जाती थी ।



कर्मचारियों की भयानक कमी के बावजूद, डॉक्टरों और अधिकारियों को फ्लोरेंस पर भरोसा नहीं था और वे उसकी बात सुनने को तैयार नहीं थे। उन्हें सेना के अस्पतालों में महिलाओं का होना पसंद नहीं था, और उन्होंने फ्लोरेंस या उसकी नर्सों को घायलों की मदद करने की अनुमति देने से इंकार कर दिया।

“मिस नाइटिंगेल, अब हम क्या करें?” नर्सों में से एक ने पूछा। “हम बस खड़े-खड़े इन बेचारे लोगों को तड़पते हुए नहीं देख सकते।”

“और हम ऐसा करेंगे भी नहीं,” फ्लोरेंस ने दृढ़ता से उत्तर दिया। “इस समय हम पुरुषों के घावों के बारे में कुछ नहीं कर सकते, लेकिन इस जगह के बारे में हम ज़रूर कुछ कर सकते हैं।”

“आओ, साथियों, काम पर लगो।”





और उन्होंने सचमुच काम किया। उन्होंने फ़र्श रगड़-रगड़ कर साफ़ किए। उन्होंने भूसा इकट्ठा किया और बीमार व घायल सैनिकों के लिए बिस्तर बनाए। उन्होंने पट्टियाँ लपेटीं, स्प्लिंट्स बनाए और अपनी अलग रसोई स्थापित की, जहाँ वे बीमार लोगों के लिए पचने योग्य भोजन तैयार करती थीं।

फिर भी डॉक्टर फ्लोरेंस की नर्सों को घायलों की देखभाल करने की अनुमति देने से इंकार करते रहे—लेकिन एक दिन अचानक पाँच सौ घायल एक साथ वहाँ आ पहुँचे।

“आपको हमें इन सैनिकों की मदद करने देनी ही होगी,” फ्लोरेंस ने डॉक्टरों से आग्रह किया।

अनिच्छा से उन्होंने सहमति दी, और जल्द ही उन्हें समझ में आ गया कि फ्लोरेंस को अपने काम की पूरी समझ है। वे उस पर अधिक से अधिक निर्भर होने लगे, और शीघ्र ही वह पूरे अस्पताल की व्यवस्था संभाल रही थी। उसने रसोई में सुधार किए, बेहतर स्वच्छता की व्यवस्था करवाई और रसद के अधिक कुशल वितरण का प्रबंध किया। लेकिन सबसे बढ़कर, फ्लोरेंस ने यह सुनिश्चित किया कि सैनिकों की ठीक से देखभाल हो—उन्हें नहलाया जाता, साफ़ कपड़े दिए जाते और उनकी चोटों का उपचार किया जाता।

हर रात फ्लोरेंस अपने हाथ में दीपक लेकर वार्डों में घूमती थी।

"इधर आओ, मुझसे बात करो," एक के बाद एक सैनिक उसके पास से गुज़रते समय पुकारते थे।



फ्लोरेंस हर एक से कुछ न कुछ कहती थी। पहली बार सैनिकों को सचमुच यह महसूस हुआ कि कोई उनकी देखभाल कर रहा है। वे प्रतीक्षा करते कि कब वह उनका हाल पूछने आएगी । वे उसे "दीपक वाली महिला" कहने लगे।





कई बार अख़बारों के संवाददाता क्रीमिया के युद्ध-क्षेत्र में आते-जाते हुए स्कूटारी में रुके। उनमें से एक बहुत प्रसिद्ध पत्रकार थे—लंदन टाइम्स के विलियम हॉवर्ड रसेल।

"हालात अच्छे नहीं हैं, मिस नाइटिंगेल," उन्होंने कहा।

"मुझे पता है," फ्लोरेंस ने उत्तर दिया, "लेकिन मैं और मेरी नर्सें जितना कर सकते हैं, उतना कर रहे हैं।"

"ऐसा लगता है कि यही लोग हैं जो कुछ कर रहे हैं। मैंने जो दूसरे अस्पताल देखे हैं, उनकी हालत इससे कहीं ज़्यादा बदतर है।"

विलियम हॉवर्ड रसेल ने लंदन लौटकर सेना के अस्पतालों की भयावह परिस्थितियों की रिपोर्ट दी। उन्होंने यह भी बताया कि फ्लोरेंस नाइटिंगेल ही अकेली थीं, जो इस स्थिति को सुधारने के लिए कुछ कर रही थीं। उनकी रिपोर्टों के परिणामस्वरूप फ्लोरेंस जल्द ही पूरे इंग्लैंड में प्रसिद्ध हो गईं।

"लूसी," एक दिन फ्लोरेंस ने अपनी मित्र से कहा, "मैं ऐसे अस्पतालों के बारे में सुन रही हूँ, जहाँ हालात यहाँ से भी ज़्यादा खराब हैं। मुझे लगता है कि मुझे वहाँ जाकर खुद देखना चाहिए। शायद मैं कुछ मदद कर सकूँ।"

लूसी ने सहमति जताई। "तुम्हारी नर्सें इतनी अच्छी तरह प्रशिक्षित हैं कि वे कुछ समय तक यहाँ सब सँभाल सकती हैं।"

इसलिए फ्लोरेंस समुद्र पार करके क्रीमिया गई। वहाँ अस्पतालों की हालत वास्तव में बहुत बुरी थी। उसने सुधार के बारे में सलाह दी, लेकिन इससे पहले कि वह काम को पूरा होते देख पाती, एक बहुत दुखद घटना घटी।



अचानक फ्लोरेंस गंभीर रूप से बीमार पड़ गई।

"मुझे नहीं लगता कि वह बच पाएँगी," एक डॉक्टर ने कहा।

"हम उन्हें मरने नहीं दे सकते," दूसरे ने उत्तर दिया। "उनके बिना हम क्या करेंगे?"

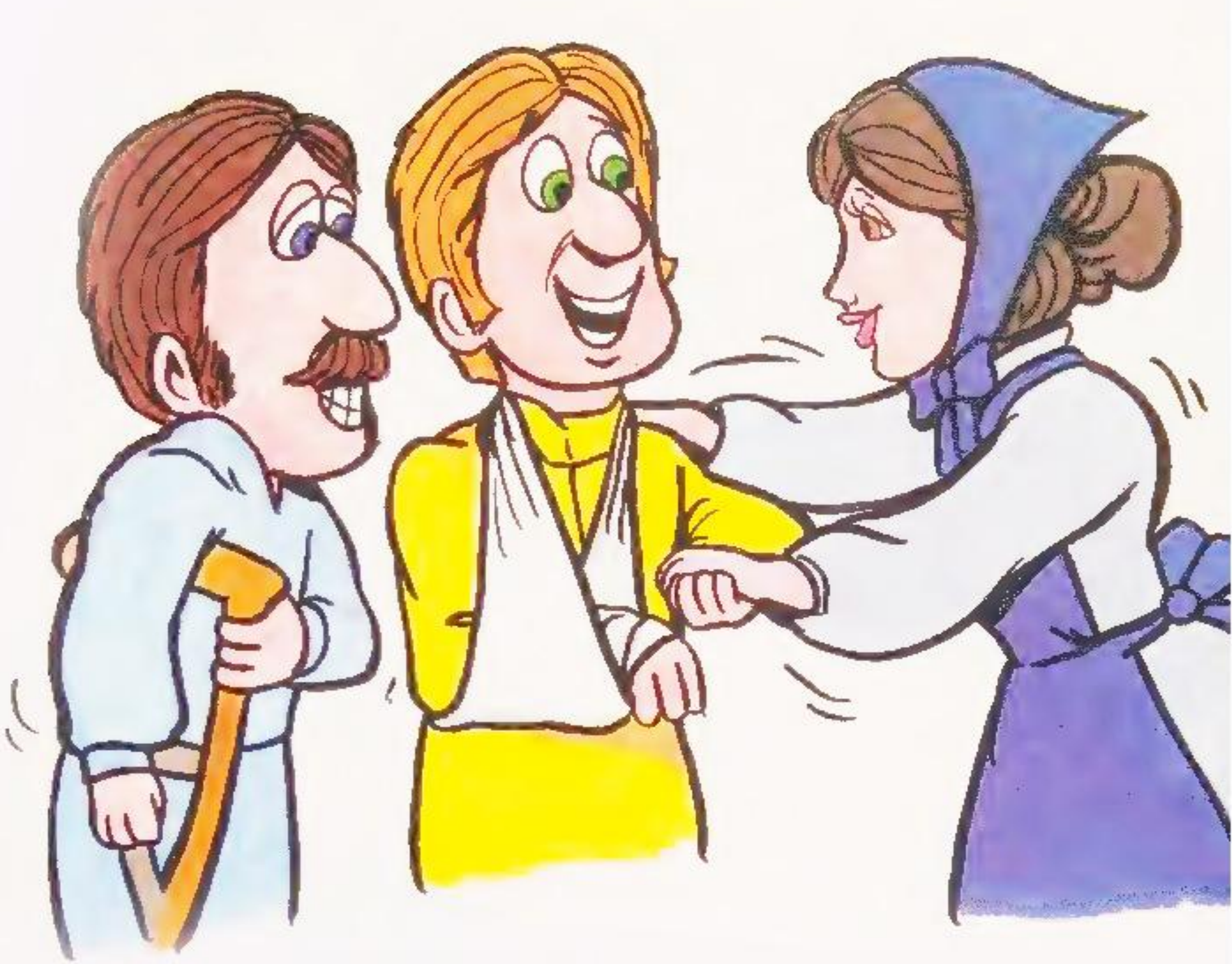
जब अस्पतालों में भर्ती सैनिकों को फ्लोरेंस की बीमारी का पता चला, तो वे बहुत व्यथित हो गए। वे इस सुंदर और करुणामय महिला से प्रेम करने लगे थे। जैसे-जैसे ख़बर फैली, हर जगह ब्रिटिश सैनिक उसके स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना करने लगे।

"हिम्मत करो, फ्लोरेंस," लूसी ने फुसफुसाकर कहा, "तुम्हें ठीक होना ही होगा। इतने सारे लोगों को तुम्हारी ज़रूरत है।"

लेकिन बेचारी फ्लोरेंस इतनी बीमार थी कि वह अपनी मित्र की आवाज़ भी मुश्किल से सुन पा रही थी।

कई दिनों तक फ्लोरेंस जीवन और मृत्यु के बीच झूलती रही। लेकिन जीने की उसकी इच्छा बहुत प्रबल थी। अंततः बुख़ार उतर गया और वह धीरे-धीरे ठीक होने लगी। जब वह फिर से स्वस्थ हुई, तो सभी बहुत खुश हुए।





जैसे ही उसमें पर्याप्त ताक़त आई, फ्लोरेंस फिर से काम पर लौट आई। वह अस्पताल की देखरेख करती, वार्डों का दौरा करती और यह सुनिश्चित करती कि सैनिकों को जितना संभव हो उतना आराम मिले। वह अपनी नर्सों से उनके घरों के लिए पत्र लिखवाती और उनका मन बहलाने के लिए किताबें और अख़बार उपलब्ध कराती। वह यह भी ध्यान रखती कि उनकी वर्दियाँ और रात के कपड़े साफ़ हों और उनके घावों की ठीक से देखभाल की जाए।

युद्ध समाप्त होने से पहले, अनेक सैनिक फ्लोरेंस की देखभाल और करुणा के कारण ही अपनी जान बचा पाए।

अंततः युद्ध समाप्त हो गया। लेकिन फ्लोरेंस का काम अभी खत्म नहीं हुआ था। इंग्लैंड लौटते समय जहाज़ पर भी वह घायलों की देखभाल करती रही।

"फ्लोरेंस, तुम्हें थोड़ा आराम करना चाहिए," लूसी ने कहा, यह देखकर कि फ्लोरेंस कितनी दुबली और पीली हो गई थी।

"घर पहुँचकर मैं आराम ही करूँगी," फ्लोरेंस ने उत्तर दिया। "इन लोगों को अभी भी देखभाल की ज़रूरत है।"

इंग्लैंड में बहुत-से लोग फ्लोरेंस का किसी महान नायक की तरह स्वागत करना चाहते थे, लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं हुई।

"मैं बस लीहर्स्ट जाकर अपने परिवार के साथ रहना चाहती हूँ," उसने लूसी से कहा।





जब फ्लोरेंस लीहर्स्ट पहुँची, तो उसके माता-पिता उसे देखकर चकित रह गए।

"तुम कितनी दुबली हो गई हो," उसकी माँ बोली। "तुम बहुत कमज़ोर और थकी हुई लग रही हो।"

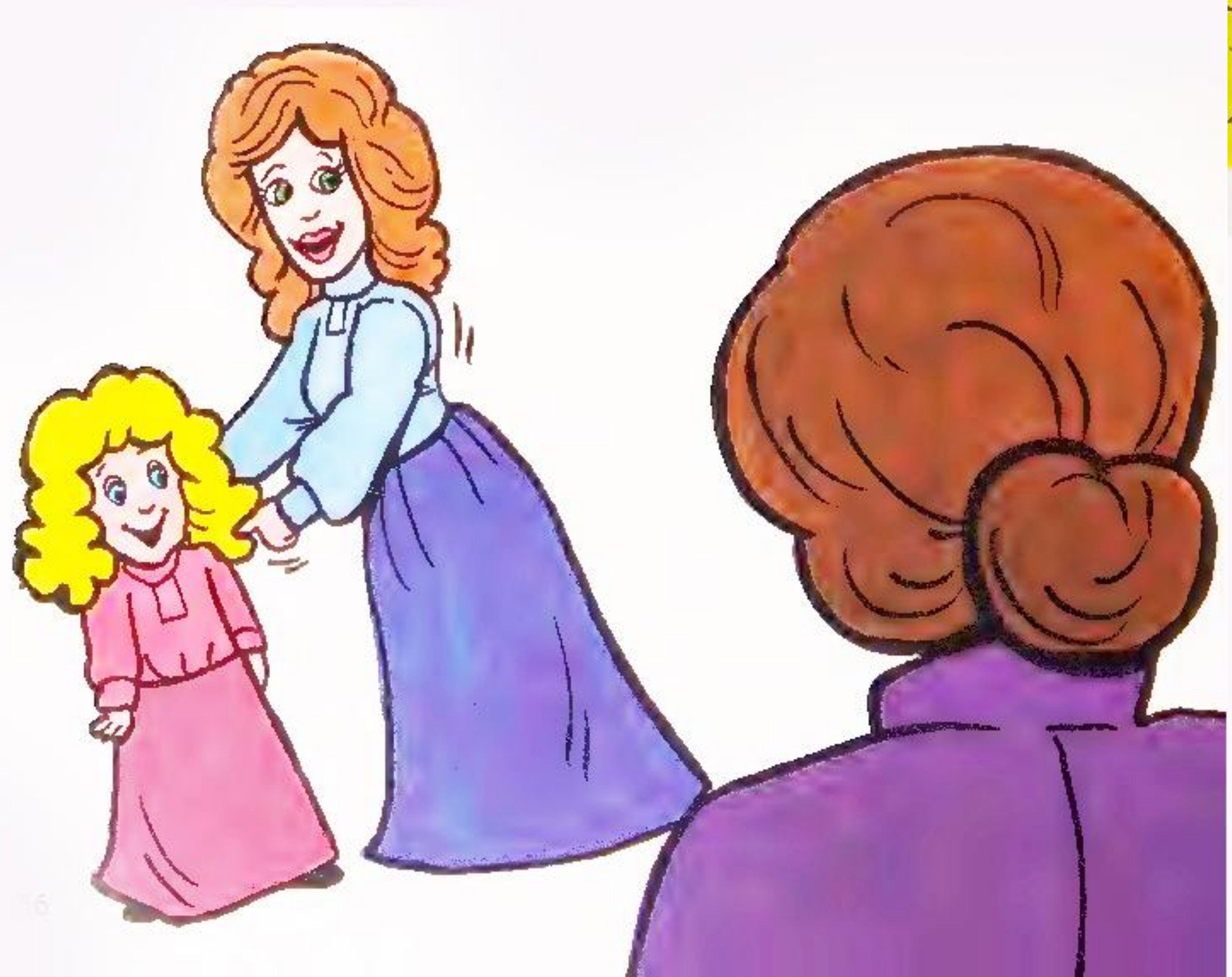
"मैं धूप में बैठकर आराम करूँगी," फ्लोरेंस ने कहा।

कुछ दिनों बाद फ्लोरेंस को अच्छा लगने लगा, लेकिन जल्द ही वह फिर अपने काम पर लौटने के लिए बेचैन हो उठी। अभी बहुत-सा काम बाकी था।

कलाकारों ने फ्लोरेंस की हाथ में दीपक लिए तस्वीरें बनाई थीं और मूर्तिकारों ने उसकी मूर्तियाँ गढ़ी थीं। जब वह लंदन लौटी, तो वह यह देखकर हैरान रह गई कि लोग उसे हर जगह पहचान लेते थे।

“मिस नाइटिंगेल, यह मेरी छोटी बेटी है,” महिलाएँ कहतीं। “मैंने इसका नाम आपके नाम पर रखा है।”

हर कोई उस दयालु महिला की चर्चा कर रहा था जिसने युद्ध में उनके सैनिकों की देखभाल की थी।





फ्लोरेंस के लिए एक और आश्चर्य था। उसके सम्मान में एक कोष बनाया गया था, जिसमें उन कई सैनिकों ने भी योगदान दिया था जिनकी उसने सेवा की थी। यह कोष बहुत बड़ी राशि का हो गया।

फ्लोरेंस बहुत प्रसन्न हुई। “अब मैं एक असली नर्सिंग स्कूल खोल सकती हूँ, लूसी,” उसने कहा। “ऐसा स्कूल जहाँ लड़कियों को स्वच्छता और सही नर्सिंग विधियों का प्रशिक्षण दिया जाएगा।”

उसने लंदन के सेंट थॉमस अस्पताल में नाइटिंगेल प्रशिक्षण विद्यालय स्थापित करने का निर्णय लिया। आज भी यह इंग्लैंड के सबसे प्रसिद्ध नर्सिंग स्कूलों में से एक है।

इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया फ्लोरेंस के काम के बारे में बहुत कुछ सुन चुकी थीं और उनसे मिलना चाहती थीं।

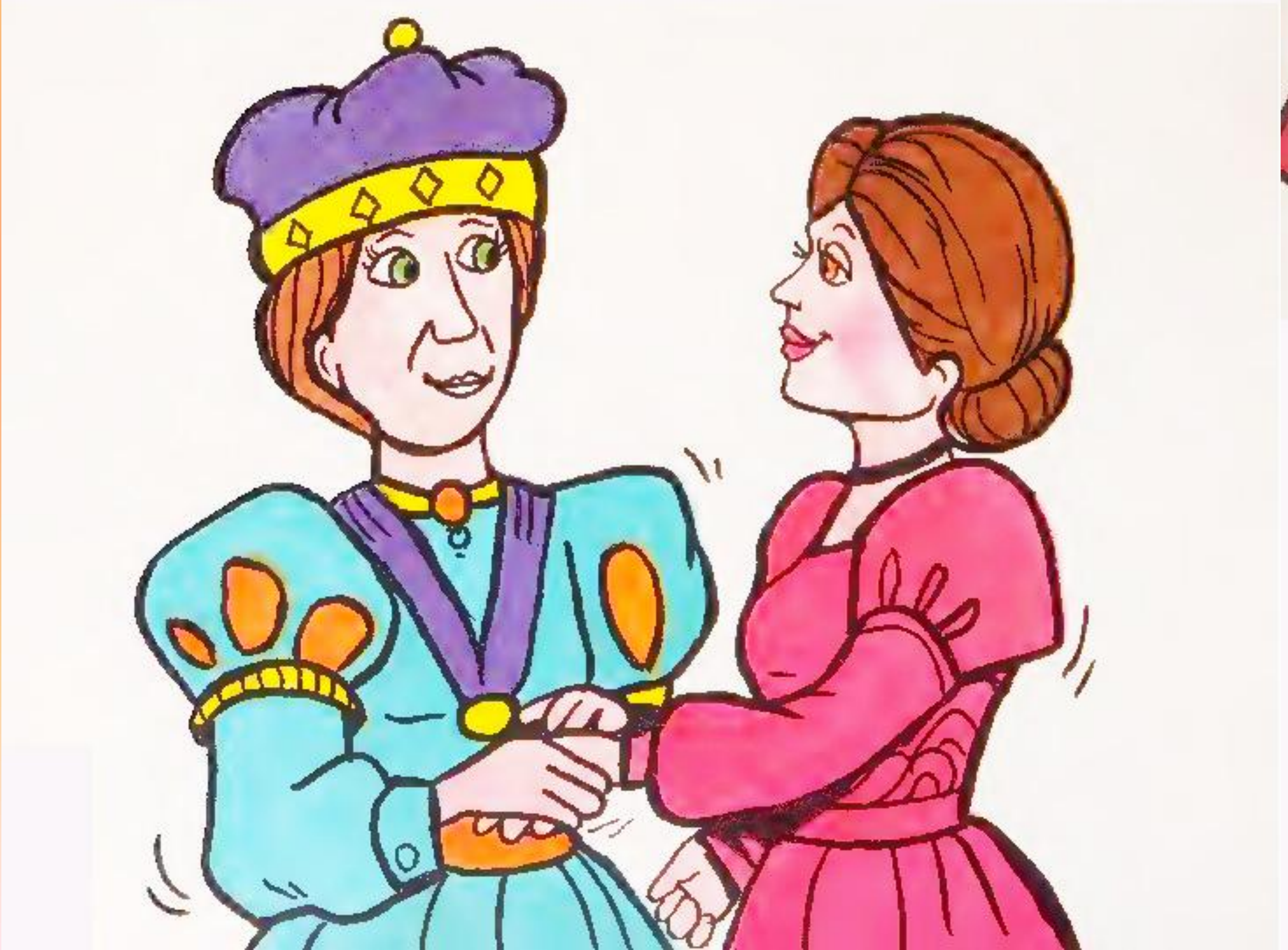
"मिस नाइटिंगेल, आप जैसी करुणामयी महिला से मिलना मेरे लिए सम्मान की बात है," महारानी ने कहा।
"आपने अद्भुत कार्य किया है।"

"धन्यवाद, महारानी," फ्लोरेंस ने उत्तर दिया, "लेकिन अभी बहुत-सा काम बाकी है। आपकी सेना का स्वास्थ्य बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

महारानी ने सहमति जताई।

"शांति के समय में भी," फ्लोरेंस ने कहा, "सैनिकों की मृत्यु-दर सामान्य जनता से अधिक है। इसे बदलना होगा।"

"मैं आपकी हर संभव सहायता करूँगी," महारानी ने वादा किया।





फ्लोरेंस ने बहुत मेहनत की। उसने सैनिकों की जीवन-स्थितियों पर ढेरों आँकड़े एकत्र किए, सैकड़ों पत्र लिखे और अधिकारियों से घंटों चर्चा की।

"लूसी, कभी-कभी मैं इतनी थक जाती हूँ कि खड़ी भी नहीं हो पाती," उसने कहा।

"मुझे डर है कि क्रीमिया की बीमारी का असर तुम्हारे स्वास्थ्य पर स्थायी रूप से पड़ गया है," लूसी ने कहा।

लूसी सही थी। जल्द ही फ्लोरेंस को ज़्यादातर समय बिस्तर पर बिताना पड़ा। लेकिन इससे उसका काम नहीं रुका। वह बिस्तर से ही काम करती रही।



कई वर्षों की मेहनत के बाद बड़े सुधार दिखाई देने लगे। सैनिकों के बैरक कम भीड़-भाड़ वाले, अधिक हवादार और बेहतर भोजन वाले हो गए। सैनिकों के स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

भारत में, जहाँ ब्रिटिश सैनिकों की मृत्यु-दर बहुत अधिक थी, फ्लोरेंस ने स्वच्छता सुधारों का सुझाव दिया। जल्द ही मृत्यु-दर घट गई।

अब नर्सिंग को सम्मानजनक पेशा माना जाने लगा। अस्पताल साफ़-सुथरे और प्रसन्न स्थान बन गए, और लोग जल्दी ठीक होने लगे।



“नाइटिंगेल पद्धति” से प्रशिक्षित कई नर्सें विदेशों में काम करने गईं। उन्हें उनकी उत्कृष्ट सेवा और करुणा के कारण हर जगह स्वागत मिला।

हालाँकि फ्लोरेंस कई वर्षों तक अस्वस्थ रही, फिर भी वह अपनी नर्सों से संपर्क में बनी रही। वह 90 वर्ष की आयु में चल बसी। पूरी दुनिया ने इस असाधारण और करुणामयी महिला के निधन पर शोक व्यक्त किया।

अपनी देखभाल और करुणा के माध्यम से फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने असंख्य जीवन बदल दिए। साधारण सैनिकों को सम्मानजनक उपचार मिला, अस्पताल मृत्यु-स्थल नहीं बल्कि स्वास्थ्य-स्थल बने, और नर्सिंग एक सम्मानित पेशा बन गया—यह सब उस करुणामयी “दीपक वाली महिला” की बदौलत हुआ।



ऐतिहासिक तथ्य



फ्लोरेंस नाइटिंगेल (1820- 1910)

फ्लोरेंस नाइटिंगेल का जन्म 12 मई, 1820 को इटली के फ्लोरेंस नगर में हुआ था, और उनका नाम उनके जन्म-स्थान के नाम पर ही रखा गया। कुछ ही समय बाद उनके संपन्न ब्रिटिश माता-पिता इंग्लैंड लौट आए, जहाँ उनका पालन-पोषण अत्यधिक वैभव और सुख-सुविधाओं के बीच हुआ।

बारह वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते फ्लोरेंस को यह समझ में आने लगा था कि बहुत-से कम सौभाग्यशाली लोग कितनी दयनीय स्थिति में जीवन जी रहे हैं, और उन्हें यह भी महसूस होने लगा कि जिस ऐश्वर्य में वे रह रही थीं, वह गलत है। सत्रह वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी निजी टिप्पणियों में लिखा कि उन्होंने ईश्वर की आवाज़ सुनी है, जो उन्हें सेवा के लिए बुला रही है। हालाँकि, उस समय फ्लोरेंस को यह स्पष्ट नहीं था कि उन्हें किस प्रकार की सेवा करनी है। सात वर्षों की अनिश्चितता और निराशा के बाद ही उन्हें यह समझ में आया कि उन्हें बीमारों की सेवा के लिए बुलाया गया है।

फ्लोरेंस की यह पुकार इतनी प्रबल थी कि उन्होंने रिचर्ड मोंक्टन मिल्न्स (जो बाद में लॉर्ड हॉटन बने) के विवाह प्रस्तावों को बार-बार ठुकरा दिया, जबकि वे उनसे बहुत प्रेम करती थीं। उन्हें लगा कि उनका ध्येय ऐसा जीवन माँगता है जिसमें विवाह न हो।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल के परिवार ने नर्स बनने के उनके निर्णय का तीव्र विरोध किया। उन दिनों अस्पताल अधिकतर गंदे होते थे और नर्सों को अक्सर अनैतिक और शराबी माना जाता था। फ्लोरेंस को अपने लक्ष्य को प्राप्त किए बिना सात और दुखद तथा निराशाजनक वर्षों का सामना करना पड़ा। फिर भी, ये वर्ष व्यर्थ नहीं गए। फ्लोरेंस ने पूरे यूरोप के अस्पताल अधिकारियों से जानकारी का आदान-प्रदान किया और धीरे-धीरे अस्पताल प्रशासन की विशेषज्ञ बन गईं।

1851 में फ्लोरेंस के परिवार ने अंततः सहमति दी और उन्हें नर्सिंग का अनुभव प्राप्त करने के लिए जर्मनी के कैसरस्वेर्थ जाने की अनुमति मिली। इसके बाद 1853 में उन्हें लंदन के एक छोटे से अस्पताल का प्रभार संभालने के लिए कहा गया। फ्लोरेंस ने इसे उत्साहपूर्वक स्वीकार किया और “इंस्टीट्यूट फॉर द केयर ऑफ सिक जेंटलवुमन इन डिस्ट्रेस्ड सर्कमस्टांसेज़” का पूरी तरह पुनर्गठन शुरू कर दिया। (बाद में इसका नाम बदलकर “फ्लोरेंस नाइटिंगेल हॉस्पिटल फॉर जेंटलवुमन” रखा गया।) अस्पताल में उनके सफल कार्य ने उन्हें मान्यता और सम्मान दिलाया।

1854 में क्रीमियन युद्ध छिड़ गया। मोर्चे से आई रिपोर्टों में क्रीमिया में ब्रिटिश सेना के अस्पतालों की भयावह स्थिति का वर्णन था। ब्रिटिश सरकार के युद्ध सचिव सिडनी हर्बर्ट ने फ्लोरेंस से युद्ध क्षेत्र में नर्सों के एक दल का नेतृत्व करने का अनुरोध किया। उन्होंने सहमति दी और 21 अक्टूबर, 1854 को 38 नर्सों के साथ रवाना हुईं।

तुर्की के स्क्यूटारी पहुँचने पर उन्होंने पाया कि वहाँ 5000 से अधिक घायल और बीमार सैनिक थे, जो गंदे, जर्जर और विशाल भवनों में पड़े थे, जहाँ बिस्तर, गद्दे और पट्टियाँ तक उपलब्ध नहीं थीं।

शुरुआत में ईर्ष्यालु सैन्य अधिकारियों और चिकित्सकीय कर्मचारियों ने सैनिकों की सेवा के उनके प्रयासों का विरोध किया, लेकिन अंततः उन्होंने उनका सम्मान जीत लिया। फ्लोरेंस ने नर्सिंग देखभाल, रसोई के काम और आहार के लिए समय-सारिणियाँ बनाईं, आवश्यक सामान की माँग करते हुए अनगिनत पत्र लिखे, और प्रतिदिन हर वार्ड का स्वयं निरीक्षण किया—कभी-कभी बिना रुके बीस घंटे तक काम करती रहीं।

इसके बाद दुर्भाग्य ने दस्तक दी। अग्रिम मोर्चों के दौरे के दौरान फ्लोरेंस नाइटिंगेल क्रीमियन बुखार से गंभीर रूप से बीमार पड़ गईं और मृत्यु के करीब पहुँच गईं। उन्हें स्वास्थ्य लाभ के लिए इंग्लैंड लौटने की सलाह दी गई, लेकिन उन्होंने हठपूर्वक इंकार कर दिया ताकि वे अपना कार्य जारी रख सकें। अस्पतालों की स्थिति सुधारने के उनके सफल प्रयासों को व्यापक मान्यता मिली और उन्हें क्रीमिया में सभी सेना अस्पतालों का प्रभार सौंप दिया गया।

1856 में इंग्लैंड लौटने पर फ्लोरेंस नाइटिंगेल को उनकी क्रांतिकारी अस्पताल प्रशासन और नर्सिंग विधियों के माध्यम से अनगिनत जीवन बचाने के लिए एक नायिका के रूप में सम्मानित किया गया। लेकिन फ्लोरेंस ने अपने कार्य को समाप्त नहीं माना। उन्होंने उन्हें दिए गए सम्मान और प्रशंसा को स्वीकार करने से इनकार कर दिया, क्योंकि उन्हें डर था कि लोकप्रियता सरकार में उनके प्रति पक्षपात उत्पन्न कर सकती है। वे सार्वजनिक जीवन से इतनी पूरी तरह ओझल हो गईं कि कुछ लोगों को लगा कि उनका निधन हो गया है।

शांतिपूर्वक फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने अपना कार्य जारी रखा। अब उनकी चिंता ब्रिटिश सेना की बैरकों में रहने की परिस्थितियों को लेकर थी। महारानी विक्टोरिया की स्वीकृति से उन्होंने ब्रिटिश सैनिकों के स्वास्थ्य, आहार और आवासीय व्यवस्था का वैज्ञानिक अध्ययन आरंभ किया। 1858 में उन्होंने Notes on Matters Affecting the Health, Efficiency and Hospital Administration of the British Army नामक एक विशाल पुस्तक प्रकाशित की, जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण सुधार हुए। उनसे भारत में सेना की स्वच्छता स्थितियों तथा अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका में सैन्य अस्पतालों की स्थापना के बारे में भी सलाह ली गई।

फ्लोरेंस का सारा कार्य सेना से ही संबंधित नहीं था। 1860 में उन्होंने क्रीमिया में उनके कार्य के सम्मान में जनता द्वारा दान की गई धनराशि से लंदन के सेंट थॉमस अस्पताल में नाइटिंगेल नर्स प्रशिक्षण विद्यालय की स्थापना की। इस विद्यालय की स्थापना को आज आधुनिक नर्सिंग की शुरुआत के रूप में माना जाता है।

अत्यधिक परिश्रम और क्रीमिया में हुई बीमारी के दुष्प्रभावों ने इस समय तक फ्लोरेंस के स्वास्थ्य पर गहरा असर डाल दिया था। वे अस्वस्थ हो गईं और अपने जीवन के अंतिम चालीस वर्षों में शायद ही कभी अपने कमरे से बाहर निकलीं। उन वर्षों में से अनेक वर्षों तक उन्होंने बिस्तर से ही कार्य करना जारी रखा और दूसरों से कड़ा परिश्रम करवाती रहीं।

उनकी वृद्धावस्था शांत रही, केवल दृष्टि के धीरे-धीरे क्षीण होने से ही वह परेशान थीं। 1907 में उन्हें ऑर्डर ऑफ मेरिट से सम्मानित किया गया—यह सम्मान पाने वाली वे पहली महिला थीं। 13 अगस्त, 1910 को 90 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ।



